पाठ - उत्साह और अट नहीं रही

शब्दार्थ-व्याख्या

उत्साह

1. **बादल, गरजो !.....फिर भर दो–बादल गरजो !**

शब्दार्थ

- **गरजो** – जोरदार गर्जना (जोरदार आवाज करना)
- **घेर-घेर** – पूरी तरह से घेर लेना
- **घोर** – भयङ्कर
- **गगन** – आकाश
- **धाराधर** – बादल
- **ललित-ललित** – सुंदर – सुंदर
- **घुंघराले** – गोल – गोल छल्ले का सा आकार
- **बाल कल्पना** – छोटे बच्चों की कल्पनाएँ (इच्छाएँ)
- **के** – से
- **पाले** – की तरह बदलना
- **विद्युत** – बिजली
- **छबि** – चित्र, चलचित्र, प्रतिच्छाया, तस्वीर
- **उर** – हृदय, मन, चित्त
- **नवजीवन** – नया जीवन
- **वज्र** – कठोर
- **नूतन** – नया

प्रसंग – उपरोक्त काव्यांश में कवि " सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी " ने उस समय का वर्णन अत्यधिक खूबसूरती के साथ किया हैं। जब बारिश होने से पहले पूरा आकाश गहरे काले बादलों से घिर जाता हैं और बार – बार आकाशीय बिजली चमकने लगती है। कवि बादलों से जोर – जोर से गरजने का निवेदन करते हैं। यहाँ पर कवि ने बादलों के रूप सौंदर्य का वर्णन भी अद्भुत तरीके से किया है और उनकी तुलना किसी छोटे बच्चे की कल्पना से की हैं। कवि कहते हैं कि बादल धरती के सभी प्राणियों को नया जीवन प्रदान करते हैं और यह हमारे अंदर के सोये हुए साहस को भी जगाते हैं। इस काव्यांश में कवि ने बादलों को उस कवि की भाँति बताया है जो, एक नई कविता का निर्माण करने वाला है।

व्याख्या – कवि बादलों से जोर – जोर से गरजने का निवेदन करते हुए बादलों से कहते हैं कि हे बादल ! तुम जोरदार गर्जना अर्थात जोरदार आवाज करो और आकाश को चारों तरफ से, पूरी तरह से घेर लो यानि इस पूरे आकाश में भयानक रूप से छा जाओ और फिर जोरदार तरीके से बरसो क्योंकि यह समय शान्त होकर बरसने का नहीं हैं। कवि बादलों के रूप सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि सुंदर – सुंदर, काले घुंघराले अर्थात गोल – गोल छल्ले के आकार के समान बादलों, तुम किसी छोटे बच्चे की कल्पना की तरह हो। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे छोटे बच्चों की कल्पनाएँ (इच्छाएँ) पल – पल बदलती रहती हैं तथा हर पल उनके मन में नई – नई बातें या कल्पनाएँ जन्म लेती हैं। ठीक उसी प्रकार तुम भी अर्थात बादल भी आकाश में हर पल अपना रूप यानि आकार बदल रहे हो। कवि आगे बादलों से कहते हैं कि तुम अपने हृदय में बिजली के समान ऊर्जा वाले विचारों को जन्म दो और फिर उनसे एक नई कविता का सृजन करो। कवि ने बादलों की तुलना कवि से की है क्योंकि जिस प्रकार बादल धरती के सभी प्राणियों को नया जीवन प्रदान करते हैं, उसी प्रकार कवि भी हमारे अंदर के सोये हुए साहस को जगाते हैं। कवि बादलों से निवेदन करते हुए कहते हैं कि बादलों

egyanarchive

तुम अपनी कविता से निराश, हताश लोगों के मन में एक नई आशा का संचार कर दो। बादल जोरदार आवाज के साथ गरजो ताकि लोगों में फिर से नया उत्साह भर जाए।

सरलार्थ – इस काव्यांश में कवि बादलों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तुम जोरदार गर्जना करो और अपनी गर्जना से सोये हुए लोगों को जागृत करो, उनके अंदर एक नया उत्साह, एक नया जोश भर दो। कवि बादलों को एक कवि के रूप में देखते हैं जो अपनी कविता से धरती को नवजीवन देते हैं क्योंकि बादलों के बरसने के साथ ही धरती पर नया जीवन शुरु होता हैं। पानी मिलने से बीज अंकुरित होते हैं और नये–नये पौधें उगने शुरू हो जाते हैं। धरती हरी – भरी होनी शुरू हो जाती हैं। लोगों की सोई चेतना भी जागृत होती है।

2. **विकल विकल, उन्मन थे उन्मन ..... बादल, गरजो !**

शब्दार्थ

- **विकल** – व्याकुल, विह्वल, बेचैन, अधीर
- **उन्मन** – अनमना, उदास, अनमनापन
- **विश्व** – संसार
- **निदाघ** – गरमी, ताप
- **सकल** – सब
- **जन** – लोग
- **अज्ञात** – जो ज्ञात न हो, जिसके बारे में पता न हो
- **अनंत** – जिसका कोई अन्त न हो
- **घन** – मेघ, बादल
- **तप्त धरा** – तपती धरती, गर्म धरती
- **शीतल** – ठंडा, शीत उत्पन्न करने वाला

प्रसंग – उपरोक्त काव्यांश में कवि " सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी " ने तपती गर्मी से बेहाल लोगों के मन की स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या – अत्यधिक गर्मी से परेशान लोगों के मन की स्थिति का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि संसार के सभी लोग अत्यधिक गर्मी के कारण बेहाल है, व्याकुल है और अत्यधिक गर्मी के कारण अब उनका मन कहीं नहीं लग रहा है। अज्ञात दिशा से आये हुए (यहां पर बादलों को अज्ञात दिशा से आया हुआ इसलिए कहा गया हैं क्योंकि बादलों के आने की कोई निश्चित दिशा नहीं होती हैं। वो किसी भी दिशा से आ सकते हैं)। और पूरे आकाश पर छाये हुए घने काले बादलों तुम घनघोर वर्षा कर, तपती धरती को अपने जल से शीतल कर दो। बादलो, तुम जोरदार आवाज के साथ गरजो और लोगों के मन में नया उत्साह भर दो।

सरलार्थ – अत्यधिक गर्मी से परेशान लोग जब धरती पर वर्षा हो जाने के बाद भीषण गर्मी से राहत पाते हैं, तो उनका मन फिर से नये उत्साह व उमंग से भर जाता है। इसी कारण कवि बादलों से निवेदन करते हैं कि वो जोरदार बरसात कर धरती को ठंडक दें और लोगों में नया उत्साह भर दे।

egyanarchive

अट नहीं रही है

1. अट नहीं रही है
   आभा फागुन की तन
   सट नहीं रही है।

शब्दार्थ

- **अट** – बाधा , रुकावट
- **आभा** – चमक
- **फागुन** – शिशिर ऋतु का दूसरा महीना, माघ के बाद का मास
- **तन** – शरीर
- **सट** – समाना

प्रसंग – होली के वक्त जो मौसम होता है, उसे फागुन कहते हैं। उस समय प्रकृति अपने चरम सौंदर्य पर होती है और मस्ती से इठलाती है। फागुन के समय पेड़ हरियाली से भर जाते हैं और उन पर रंग-बिरंगे सुगन्धित फूल उग जाते हैं। इसी कारण जब हवा चलती है, तो फूलों की नशीली ख़ुशबू उसमें घुल जाती है। इस हवा में सारे लोगों पर भी मस्ती छा जाती है, वो काबू में नहीं कर पाते और मस्ती में झूमने लगते हैं।

व्याख्या – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' जी ने फागुन माह में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन बहुत ही खूबसूरत ढंग से किया है। कवि कहते हैं कि फागुन की आभा अर्थात सुंदरता इतनी अधिक है कि उस पर से नजर हटाने को मन ही नहीं करता। अर्थात कोई भी अपने आप को उसका आनंद लेने से रोक नहीं पा रहा है। फागुन की सुंदरता प्रकृति में समा नहीं पा रही है यानि वसंत ऋतु में प्रकृति बहुत सुंदर लग रही हैं।

सरलार्थ – कवि के अनुसार फागुन मास में प्रकृति इतनी सुन्दर नजर आती है कि उस पर से नजर हटाने को मन ही नहीं करता। फागुन के महीने में प्रकृति में होने वाले बदलावों से सभी प्राणी बेहद ख़ुश हो जाते हैं। कविता में कवि स्वयं भी बहुत ही खुश लग रहे हैं।

egyanarchive

2. कहीं साँस लेते हो …….. हट नहीं रही है।

शब्दार्थ

- **नभ** – आकाश , आसमान
- **पर** – पंख

प्रसंग – फागुन माह में ऐसा लगता हैं मानो प्रकृति एक बार फिर दुल्हन की तरह सज धज कर तैयार हो गयी हैं क्योंकि वसंत ऋतु के आगमन से सभी पेड़ – पौधे नई – नई कोपलों (नई कोमल पत्तियों) व रंग – बिरंगे फूलों से लद जाते हैं। और जब भी हवा चलती हैं तो सारा वातावरण उन फूलों की मधुर खुशबू से महक उठता हैं।

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवि ' सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ' जी ने उस समय का वर्णन किया हैं जब वसंत ऋतु में हर ओर हरियाली और फूलों की खुशबु फैल जाती है। उस समय कवि को ऐसा लगता हैं मानो जैसे फागुन ख़ुद सांस ले रहा हो और सुगन्धित वातावरण से हर घर को महका रहा हो। कवि आगे कहते हैं कि कभी – कभी मुझे ऐसा एहसास होता है

जैसे तुम (फागुन माह) आसमान में उड़ने के लिए अपने पंख फड़फड़ा रहे हो। कवि वसंत ऋतु की सुंदरता पर मोहित हैं। इसीलिए वो कहते हैं कि मैं अपनी आँखें तुमसे हटाना तो चाहता हूँ लेकिन मेरी आँखें तुम पर से हट ही नहीं रही हैं।

सरलार्थ – इस काव्यांश में कवि कहते हैं कि घर – घर में उगे हुए पेड़ों पर रंग – बिरंगे फूल खिले हुए हैं। उन फूलों की ख़ुशबू हवा में यूँ बह रही है, मानो फागुन ख़ुद सांस ले रहा हो। इस तरह फागुन का महीना पूरे वातावरण को आनंद से भर देता है। इसी आनंद में झूमते हुए पक्षी आकाश में अपने पंख फैला कर उड़ने लगते हैं। यह मनोरम दृश्य और मस्ती से भरी हवाएं हमारे अंदर भी हलचल पैदा कर देती हैं। यह दृश्य हमें इतना अच्छा लगता है कि हम अपनी आँख इससे हटा ही नहीं पाते। यहाँ पर फागुन माह का मानवीकरण किया गया हैं।

3. पत्तों से लदी डाल ……. पट नहीं रही है।

शब्दार्थ

- **लदी** – भरी
- **डाल –** पेड़ की शाखा
- **उर** – हृदय
- **मंद –** धीमे , धीरे
- **गंध –** खुशबू , सुगंध
- **पुष्प माल –** फूलों की माला
- **पाट – पाट** – जगह – जगह
- **शोभा श्री** – सौन्दर्य से भरपूर
- **पट** – समाना

प्रसंग – पेड़ों पर नए पत्ते निकल आए हैं , जो कई रंगों के हैं। कहीं – कहीं पर कुछ पेड़ों में लगता है कि धीमी – धीमी खुशबू देने वाले फूलों की माला लटकी हुई है। हर तरफ सुंदरता बिखरी पड़ी है और वह इतनी अधिक है कि धरा पर समा नहीं रही है।

व्याख्या – वसंत ऋतु में चारों ओर के मनमोहक वातावरण का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं कि सभी पेड़ – पौधों की शाखाओं में नये–नये कोमल पत्ते निकल आते हैं , जिसके कारण चारों तरफ के पेड़ हरे एवं लाल दिखाई दे रहे हैं क्योंकि पेड़ों पर हरे पत्तों के बीच लाल फूल उग आते हैं। कवि उस समय की कल्पना करते हुए कहते हैं कि ऐसा लग रहा हैं मानो जैसे प्रकृति ने अपने हृदय पर रंग – बिरंगी धीमी खुशबू देने वाली कोई सुंदर सी माला पहन रखी हो।

कवि के अनुसार वसंत ऋतु में प्रकृति के कण – कण में अर्थात जगह – जगह इतनी सुंदरता बिखरी पड़ी है कि अब वह इस पृथ्वी में समा नहीं पा रही है ।

सरलार्थ – कवि के अनुसार फागुन मास में प्रकृति की सुन्दरता अत्यधिक बढ़ जाती है। चारों तरफ पेड़ों पर हरे पत्ते एवं रंग–बिरंगे फूल दिखाई दे रहे हैं और ऐसा लग रहा हैं, मानो पेड़ों ने कोई सुंदर, रंगबिरंगी माला पहन रखी हो। इस सुगन्धित पुष्प माला की ख़ुशबू कवि को बहुत ही मनमोहक लग रही है। कवि के अनुसार, फागुन के महीने में यहाँ प्रकृति में होने वाले बदलावों से सभी प्राणी बेहद ख़ुश हो जाते हैं। कविता में कवि स्वयं भी बहुत ही खुश लग रहे हैं। यहाँ भी मानवीकरण अलंकार का प्रयोग किया गया हैं।

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

उत्साह

1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

उत्तर- निराला क्रांतिकारी कवि थे| वे समाज में बदलाव लाना चाहते थे इसलिए जनता में चेतना जागृत करने के लिए और जोश जगाने के लिए कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए न कह 'गरजने' के लिए कहा है| गरजना शब्द क्रान्ति, बदलाव, विरोध दर्शाता है|

2. कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

उत्तर- कवि ने गीत में बादलों के माध्यम से लोगों में उत्साह का सृजन करने को कहा है| वह लोगों को क्रान्ति लाने के लिए उत्साहित करना चाहते हैं इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है|

3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?

उत्तर- कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है -

- पानी बरसा कर सब की प्यास बुझाता है और सुखी बनाता है|
- गर्जन कर क्रांतिकारी चेतना जागृत करता है|
- नवनिर्माण कर नव-जीवन प्रदान करता है|

4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। उत्साह कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है, छाँटकर लिखें।

उत्तर- कविता की इन पंक्तियों में नाद-सौंदर्य मौजूद है -

1. "घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
2. ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले
3. "विद्युत-छबि उर में"
4. विकल-विकल, उन्मन थे उन्मन

रचना और अभिव्यक्ति

5. जैसे बादल उमड़-घुमड़कर बारिश करते हैं वैसे ही कवि के अंतर्मन में भी भावों के बादल उमड़-घुमड़कर कविता के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। ऐसे ही किसी प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपने उमड़ते भावों को कविता में उतारिए।

उत्तर-

बारिश की बूँदें

egyanarchive

घने काले बादल छाए,
ठंडी-ठंडी हवा संग आए।
धरती प्यास से थी व्याकुल,
बूँदों ने उसे फिर से हर्षाए।
बूँदें गिरीं तो फूल मुस्काए,
हरियाली ने गीत सुनाए।
नदियाँ गुनगुनाने लगीं,
पंछी भी झूमने लगे।
मन मेरा भी भीग गया,
खुशियों का झरना फूट गया।
प्रकृति के इस मधुर उपहार में,
मैंने पाया सच्चा प्यार।

पाठेतर सक्रियता

6. बादलों पर अनेक कविताएँ हैं। कुछ कविताओं का संकलन करें और उनका चित्रांकन भी कीजिए।

उत्तर-

बादलों पर कविताएँ

1. सूरज छुपा बादलों में

सूरज छुपा बादलों में,
झाँके कभी, छिप जाए।
कभी हँसे, कभी रो दे,
बच्चों सा इठलाए।

चित्रांकन का सुझाव:

बादलों के बीच से झाँकता हुआ सूरज बना सकते हो, जिसमें बादल सफेद और हल्के भूरे रंग के हों।

---

2. काले-काले बादल आए

काले-काले बादल आए,
पानी की फुहारें लाए।
बिजली चमकी, गरजा नभ,
धरती ने चादर भीगी पाई।

egyanarchive

चित्रांकन का सुझाव:
बिजली चमकते बादल और हल्की बारिश का दृश्य बना सकते हो, जिसमें खेत और पेड़ भी दिखें।

---

3. बादल का संदेश
आया बादल दौड़ता,
पर्वत-नदियों को छोड़ता।
लेकर आई शीतल बयार,
बरस पड़ा सब पर उपकार।
चित्रांकन का सुझाव:
उड़ते हुए बादल और नीचे बहती नदियों का सुंदर दृश्य बना सकते हो।

---

4. नन्हा बादल
नन्हा बादल टप-टप गिरा,
धरती का आँचल भीगा।
फूलों ने गुनगुनाया गीत,
हर दिल में छा गया प्रीत।
चित्रांकन का सुझाव:
एक छोटा प्यारा बादल और नीचे खिलते रंग-बिरंगे फूलों का चित्र बना सकते हो।

अट नहीं रही

1. छायावाद की एक खास विशेषता है अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।
उत्तर- कविता के निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है कि प्रस्तुत कविता में अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाया गया है :
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है|
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है|

egyanarchive

2. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

उत्तर- कवि की आँख फागुन की सुंदरता से इसलिए हट नहीं रही है क्योंकि इस महीने में प्रकृति का सौंदर्य अत्यंत मनमोहक होता है| पेड़ों पर हरी और लाल पत्तियाँ लटक रहे हैं| चारों ओर फैली हरियाली और खिले रंग-बिरंगे फूल अपनी सुगंध से मुग्ध कर देते हैं| प्रकृति का नया रंग और सुगंध जीवन में नयी ऊर्जा का संचार करती है|

3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है ?

उत्तर- प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन निम्नलिखित रूपों में किया है -

• पेड़-पौधे नए पत्ते पाकर खिलखिला रहे हैं|

• फूलों की खुशबू वातावरण को सुगन्धित कर रही है|

• डालियाँ कहीं हरी तो कहीं लाल पत्तियों से भर जाती हैं|

• बाग़-बगीचों में चारों ओर हरियाली छा गयी है|

• कवि को प्रकृति के सौंदर्य से आँख हटाना मुश्किल लग रहा है|

4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

उत्तर- फागुन में प्रकृति की शोभा अपने चरम पर होती है| पेड़-पौधें नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। इस तरह फागुन का सौंदर्य बाकी ऋतुओं से भिन्न है।

5. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ बताएँ।

उत्तर- महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। उनके काव्य-शिल्प की विशेषताएँ हैं-

• दोनों कविताओं में प्रकृति चित्रण द्वारा मन के भावों को प्रकट किया गया है|

• मानवीकरण अलंकार का प्रयोग हुआ है| पहली कविता में कवि बादल को गरज-गरज कर बरसने को कह रहे हैं तो दूसरी कविता में कवि फागुन से बात करते हैं|

'कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो|'

• कविताओं में तत्सम शब्दों का प्रयोग उचित मात्रा में किया गया है|

• गीत-शैली का प्रयोग हुआ है| लयबद्धता साफ़ दिखती है|

• अनुप्रास, रूपक, यमक, उपमा आदि अलंकारों का प्रयोग अच्छे तरीके से किया गया है|

रचना और अभिव्यक्ति

6. होली के आसपास प्रकृति में जो परिवर्तन दिखाई देते हैं, उन्हें लिखिए।

egyanarchive

होली के आसपास प्रकृति में दिखाई देने वाले परिवर्तन:

1. **बसंत ऋतु का आगमन** होता है, जिससे चारों ओर हरियाली छा जाती है।
2. **पेड़-पौधे** नए पत्तों और रंग-बिरंगे फूलों से भर जाते हैं।
3. **पलाश**, **गुलमोहर** और **अमलतास** जैसे पेड़ सुंदर लाल, पीले फूलों से लद जाते हैं।
4. **खेतों में गेहूँ और सरसों की फसलें** पकने लगती हैं, जिससे सुनहरी चादर सी बिछ जाती है।
5. **ठंडी हवाओं** के स्थान पर अब **हल्की गर्माहट वाली बयार** बहने लगती है।
6. **पक्षी** चहचहाने लगते हैं और प्रकृति में नई उमंग और उल्लास दिखाई देता है।
7. वातावरण में एक **मीठी सुगंध** और **खुशहाली** फैल जाती है।
8. लोग **रंगों और फूलों** के साथ होली के उत्सव की तैयारियों में जुट जाते हैं।
9. रातों में **फागुन की मस्ती भरी हवा** बहती है और लोग **फाग** (होली के गीत) गाते हैं।
10. पूरा वातावरण **उल्लास, प्रेम और भाईचारे** से भर जाता है।

पाठेतर सक्रियता

6. फागुन में गाए जाने वाले गीत जैसे होरी, फाग आदि गीतों के बारे में जानिए।

उत्तर-

फागुन में गाए जाने वाले गीत: **होरी और फाग**

1. होरी गीत:

- **होरी** वे लोकगीत हैं जो **होली के अवसर पर** गाए जाते हैं।
- इनमें **प्रेम**, **रंग**, **हंसी-ठिठोली** और **मस्ती** का सुंदर चित्रण होता है।
- होरी गीतों में अक्सर **कृष्ण और राधा** की होली खेलने की कथाओं का वर्णन होता है।
- ये गीत धमार, कहरवा जैसे तालों में गाए जाते हैं।
- खासतौर पर उत्तर भारत के ब्रज, अवध, बुंदेलखंड आदि क्षेत्रों में होरी गीत लोकप्रिय हैं।
- उदाहरण:
  "खेलत हैं रघुवीरा अवध माँ, होरी खेलत हैं रघुवीरा..."

---

2. फाग गीत:

- **फाग** शब्द **फाल्गुन** मास से बना है, जब होली का पर्व आता है।
- फाग गीतों में **बसंत ऋतु का सौंदर्य**, **प्रकृति की सुंदरता**, **प्रेमभावना** और **होली का उत्साह** व्यक्त किया जाता है।
- ये गीत समूह में गाए जाते हैं, जहाँ ढोलक, मंजीरा, झांझ आदि वाद्ययंत्रों का साथ होता है।
- फाग गीतों में **खुशी**, **मिलन**, **शरारतें** और **सामाजिक प्रेमभावना** झलकती है।

egyanarchive

- उदाहरण:
  "फागुन आयो रे, फागुन आयो रे..."

मुख्य विशेषताएँ:

- इन गीतों में **रंगों की मस्ती**, **प्रकृति का उल्लास**, और **लोक-संस्कृति का जीवंत चित्र** मिलता है।
- होरी और फाग गीत **समूह में गाते** हुए होली का आनंद दुगना कर देते हैं।
- ये गीत **हँसी-मज़ाक**, **प्रेम**, और **भाईचारे** का संदेश देते हैं।

egyanarchive